दिनांक : 15 दिसम्बर, 2013

राजनीति और हठधार्मिता

अरूण जेटली
नेता प्रतिपक्ष (राज्यसभा)

लोकतंत्र महान समतावादी है। यह राजनीतिज्ञों को सत्ता मे लाता है; यह उन्हें सत्ता से बाहर भी करता है। जो शिखर पर पहुंचते है, उनका पतन भी होता है, जब उनका पतन होता है, तो इतिहास उनका साथ देने वाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर उनको जज करता है। कल, 14 दिसम्बर, 2013 को मंत्रियों एवं एक अन्य नेता से घिरे कांग्रेस पार्टी के उपाध्यक्ष की प्रेस कांफ्रेंस देखी। प्रवर समिति की रिपोर्ट और लोकपाल विधेयक की विशेषताओं के बारे मे सारे देश को बताया गया। प्रेस से मिलने वाले चार सज्जनों की बाडी लैंगुएज बदली हुई थी। यह गत तीन वर्षो के दौरान इन नेताओं द्वारा अपनाये गये स्टैंड के बिल्कुल विपरीत थी। पूर्व में उन्होंने श्री अण्णा हजारे को लोकपाल विधेयक के समर्थन में अनशन पर बैठने से रोका था। उन्होंने सभी प्रस्तावों को केवल रद्द करने के लिए ही टीम अण्णा को निरन्तर चलने वाली बातचीत में शामिल किया था। वे लोकसभा में एक ऐसे अस्वीकार्य विधेयक पेश करने मे सफल हुए थे, जिसे एक "गेम चेंजर" के रूप में बताया गया था। यह एकजुट विपक्ष द्वारा विरोध किये जाने के बावजूद एकतरफा लोकसभा में पारित किया गया। जब राज्यसभा ने विधेयक में संशोधन करने की मांग की, तो सदन अर्द्धरात्रि में स्थगित कर दिया गया। जब प्रवर समिति ने सिफारिशें की, तो उन्हें लगभग एक वर्ष बाद संसद के समक्ष रखा गया। वे इस बात पर अड़े रहे कि सीबीआई सरकार के अधीन होगी न कि लोकपाल के अधीन।

परन्तु कल, भाषा, रवैया और बाडी लैंगुएज सब अलग–अलग था। चुनावों मे करारी हार के बाद ताकतवर धराशायी हो गये। गेम चेंजर को छोड़ दिया गया। अब वे सुलह संबंधी रवैया ढूंढ रहे हैं।

लोकतंत्र प्रणाली में एक मौलिक परिवर्तन यह है कि अब सत्ता किसी एक संस्था में निहित नहीं है। राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो चुका है। सरकार, विपक्ष, न्यायपालिका का मीडिया, नौकरशाह, सिविल सोसायटी, जनमत सभी सत्ता के रखवाले हैं। सभी शक्तियां प्राप्त करने वाली कोई भी संस्था अवश्य ही गुमराह हो सकती है। हठधार्मिता कभी भी ताकत नहीं बन सकती। यह विश्वास की कमी का मखौटा है। हठी लोग कभी भी सीख नहीं सकते। हठधार्मिता को विश्वास से कभी भी कन्फूयज नहीं किया जाना चाहिए। हठधार्मिता से आप में अतिविश्वास पैदा करता है, कल की प्रेस कांफ्रेंस मात्र इसकी पुष्टि करती है।

यह नई उभरने वाली "आप" के लिये भी एक सबक है। पार्टी ने दिल्ली विधानसभा के हाल के चुनावों मे उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। इसका जश्न मनाने वाला मूड को हठधार्मिता में बदल दिया है। भाजपा को तीन राज्य विधानसभाओं मे पूर्ण बहुमत प्राप्त है। उनमें से दो की भारी बहुमत से जीता है। चौथी विधानसभा में भाजपा सर्वाधिक सीटे प्राप्त करने वाले अकेली पार्टी है। खुशी एवं जश्न पहले ही दिन मनाये गये। पार्टी अगले ही दिन काम मे जुट गई। जीत के बाद मर्यादा गरिमा एवं विनम्रता बनाये रखना अनिवार्य है। हठधार्मिता पतन का पहला संकेत है।

राजनीति में जो शिखर पर पहुंचता है, उनका पतन भी होता है। अन्य लोगों का भी यही विचार है कि राजनीति में विनम्रता होनी चाहिए। आप पर्टी को इससे सबक लेना चाहिए। आज वे राजनीतिज्ञ विरोधियों को चुनौती दे रहे हैं। वे अन्य पार्टियों के नेताओं का सम्मान नहीं करते। श्रीमती सोनिया गांधी और राजनाथ सिंह को भेजे गये उनके पत्रों की शब्दावली अशिष्ट है। अब तो अपने मेन्टर अण्णा को नहीं बख्श रहे हैं।

राजनीतिज्ञ वर्ग के लिए यह एक सबक होना चाहिए। लोकपाल के हठी रवैया अपनाने के तीन वर्ष बाद कांग्रेस ने झुकने का निर्णय लिया है। आशा है कि आप पार्टी इससे सीख ले।

*****